16

भाषा-विज्ञान एवं बौद्धिक विकास

यह लेख व्याकरण और व्याकरणिक नियमों को एक तार्किक खोज के नज़रिए से देखने का आग्रह करता है और यह स्पष्ट करता है कि व्याकरण जानना व भाषा के व्याकरणिक नियमों को याद करना या रटना भाषा समझने व जानने में मदद नहीं करता। हिन्दी वाक्यों के उदाहरण लेकर लेख यह दिखाने की कोशिश करता है कि कैसे रोचक व खोजपूर्ण अभ्यासों से बच्चे इन नियमों को खोज सकते हैं व समझ सकते हैं। लेख यह भी इंगित करता है कि व्याकरण को व्यवहार में उपयोग करने की क्षमता भी बच्चों में कैसे आ सकती है। इसके अलावा पिछले लेख को आगे बढ़ाते हुए यह लेख भाषा को गणित व विज्ञान के पहलुओं से जोड़ता है और बताता है कि भाषा के गुणों को समझने में वैज्ञानिक खोज जैसे तरीके कैसे उपयोग किए जा सकते हैं।

भाषा-विज्ञान और व्याकरण में कोई विशेष अन्तर नहीं है। पर अक्सर विद्यार्थी व्याकरण के अध्ययन को नीरस और निरर्थक पाते हैं। यह सच भी है कि भाषा-विज्ञान जानने से ही कोई भाषा नहीं सीख जाता। और यह भी सच है कि अनेक लोग भाषा-विज्ञान के विषय में कुछ भी नहीं जानते पर कई भाषाएँ सहज ही बोल और समझ लेते हैं। दूसरी ओर कई बड़े-बड़े भाषा वैज्ञानिक अपनी मातृभाषा के सिवाय कोई भी दूसरी भाषा समझ या बोल नहीं सकते। अत: भाषा पढ़ाने के लिए हम बच्चों को भाषा-विज्ञान अधिक पढ़ाएँ, इससे कोई विशेष लाभ नहीं है। लेकिन जिन वैज्ञानिक तरीकों से भाषा के क्षेत्र में शोध कार्य होता है, उनका प्रयोग कक्षा में निश्चय ही हो सकता है। इससे दो लाभ होंगे: एक तो बच्चों का ध्यान भाषा के सही रूपों की ओर आकर्षित होगा। दूसरे, बच्चों के बौद्धिक विकास में भी मदद मिलेगी।

बहुत ही साधारण शब्दों में विज्ञान की प्रक्रिया कुछ इस प्रकार है: हम कुछ अवलोकन करते हैं, फिर उन अवलोकनों के आधार पर एक नियम बनाते हैं। उस नियम का प्रयोग अपने परिवेश में करते रहते हैं। अक्सर अपवाद सामने आते हैं और हम नियम बदलते रहते हैं। यही प्रक्रिया भाषा के माध्यम से हम बहुत ही सरल तरीके से कक्षा में सिखा सकते हैं। वैज्ञानिक शोध की प्रक्रिया एवं भाषा-विज्ञान के सिद्धान्तों का कक्षा में सहज सदुपयोग कैसे हो सकता है, इसका एक उदाहरण मैं इस लेख में देना चाहता हूँ। इस सम्बन्ध में हमारा सबसे बड़ा सहारा यह है कि हमें अवलोकन लेने कहीं दूर नहीं जाना है। हर विद्यार्थी के पास भाषा का अपार भण्डार है। उसको सही भाषा सिखाने के लिए और उसके बौद्धिक विकास के लिए हमें उसी का प्रयोग करना है।

मानकीकृत हिन्दी के निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए। बच्चे अक्सर इसके प्रयोग में गलतियाँ करते हैं।

राम खाना खाता है।

सीता खाना खाती है।

राम ने खाना खाया।

सीता ने खाना खाया।

राम ने चाय पी।

सीता ने चाय पी।

सीता ने राम को बुलाया।

राम ने सीता को बुलाया।

होशंगाबाद के आसपास के क्षेत्र में, उदाहरण के लिए, पहले दो वाक्यों के लिए आप अक्सर

1. राम खाना खाबो।
2. सीता खाना खाबो।

का प्रयोग देखेंगे। इलाहाबाद के आसपास के क्षेत्रों में आपको इन वाक्यों के लिए निम्न प्रयोग मिल सकते हैं

1. राम खाना खातबा/खात है।
2. सीता खाना खात है।
3. राम खान खाहे लेहेस।
4. सीता खाना खाहे लेहेस/लेहेसि।

5. राम चाय पी लेहेस।

6. सीता चाय पी लेहेसि।

7. सीता राम के बोलायसि।

8. राम सीता के बोलयस/बोलापन।

यहाँ यह कहना ज़रूरी है कि बोलियाँ वैज्ञानिक तौर पर उतनी ही नियमबद्ध हैं जितनी कि मानकीकृत भाषाएँ। यह दावा गलत है कि बोलियाँ हिन्दी भाषा का बिगड़ा हुआ रूप हैं। हिन्दी स्वयं निस्संदेह बोलियों से ही पनपी है। लेकिन सामाजिक विकास के साथ-साथ बोलियों और मानकीकृत हिन्दी का प्रयोग अलग-अलग परिस्थितियों में होने लगा है। परेशानी उस समय होती है जब हमारे गाँवों के बच्चे इसलिए पिछड़ जाते हैं क्योंकि वे बोलियों का प्रयोग उन परिस्थितियों में कर बैठते हैं जहाँ मानकीकृत हिन्दी का प्रयोग वांछित है। या उनकी हिन्दी में बोलियों का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

उदाहरण के लिए, होशंगाबाद के एक हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने हिन्दी में प्रस्ताव लिखते समय निम्नलिखित वाक्य लिखे-

इस मेले की सौन्दर्य बड़ी ही देखने योग्य है।

हमको बहुत आनन्द आए।

उसने अपनी पत्नी को खिला करता था। आदि।

स्पष्ट है कि ये बच्चे मानकीकृत हिन्दी के वे नियम नहीं समझ पाए हैं जिनके अनुसार हिन्दी वाक्य के पदों में तालमेल रहता है। हम कक्षा में क्या करें जिससे बच्चों का ध्यान भाषा के सही नियमों की तरफ आकर्षित हो और साथ-साथ उनका बौद्धिक विकास भी हो।

हिन्दी के ऊपर दिए गए 1 से 8 तक के वाक्य देखिए। इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि हिन्दी में कर्त्ता और क्रिया में एक विशेष तालमेल रहता है। कक्षा में हम विद्यार्थियों से कह सकते हैं कि वाक्य 1 और 2 जैसे और वाक्य बनाएँ और उनको बोर्ड पर लिखें, जैसे-

राम खाना खाता है।

लड़का पानी पीता है।

मोहन सेब खाता है।

रमेश पुस्तक पढ़ता है।

विनोद खाना बनाता है।

सीता खाना खाती है।

लड़की पानी पीती है।

आरती सेब खाती है।

अंजु पुस्तक पढ़ती है।

अनिता खाना बनाती है। आदि

इन वाक्यों के आधार पर कर्त्ता और क्रिया पदों में तालमेल का एक नियम विद्यार्थी सरलता से बना लेंगे। वह नियम कुछ इस प्रकार होगा,

नियम-1: यदि कर्त्ता पुल्लिंग है, तो क्रिया में 'ता' लगेगा और यदि कर्त्ता स्त्रीलिंग है, तो क्रिया में 'ती' लगेगा।

क्या यह नियम ऊपर दिए गए वाक्यों के लिए सही है? हाँ। क्या यह नियम हिन्दी भाषा के सभी वाक्यों के लिए सही है? नहीं। यह मेरा अनुभव है कि बच्चों को इस तरह की छानबीन करने में विशेष आनन्द आता है। नियम बनाते हुए उन्हें एक विशेष उपलब्धि का एहसास भी होता है। बच्चे शीघ्र ही नियम-1 के कई अपवाद आपके सामने रखेंगे, जैसे-

लड़के पानी पीते हैं।

लड़कियाँ पानी पीती हैं।

मैं खाना खाता हूँ।

वह सेब खाता है।

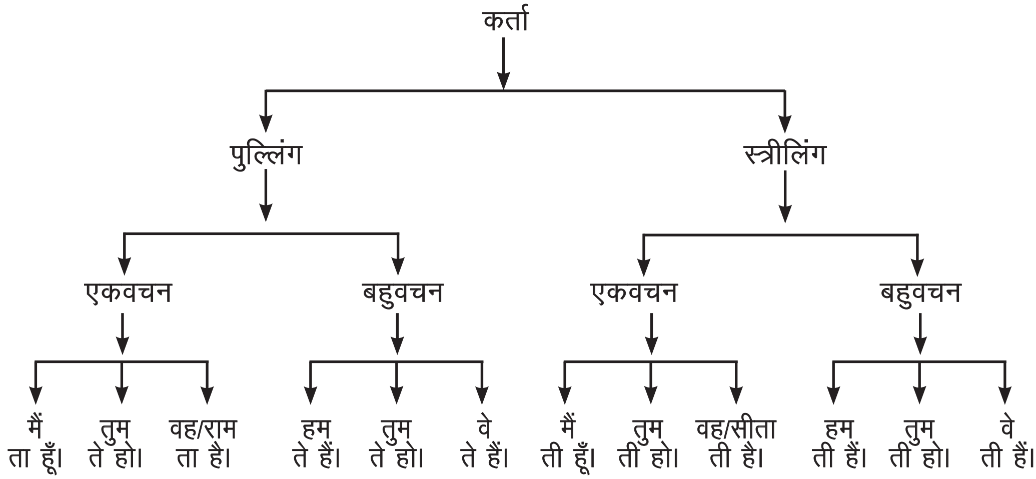
हम खाना खाते हैं।

वे सेब खाते हैं। आदि।

इस तरह के कई उदाहरण जमा करके बच्चों से कहिए उन्हें अलग-अलग समूहों में बाँट दें। धीरे-धीरे बच्चे समझने लगेंगे कि नियम-1 क्यों गलत है। उनके लिए यह समझना मुश्किल नहीं होगा कि हिन्दी के कर्त्ता और क्रिया का तालमेल लिंग पर ही नहीं अपितु 'वचन' और 'पुरुष' पर भी निर्भर करता है। काफी अभ्यास के बाद बच्चे कर्त्ता-क्रिया के तालमेल की तालिका स्वयं बना लेंगे।

नियम-2: कर्त्ता-क्रिया के तालमेल की तालिका देखें।

वर्तमान काल में यदि कर्त्ता विभक्ति-रहित होगा, तो कर्त्ता और क्रिया का तालमेल नियम-2 के अनुसार ही होगा। यदि कर्त्ता में विभक्ति है, जैसा कि ऊपर वाक्य 3 से 6 में है, तो अलग नियम बनाना पड़ेगा। विद्यार्थी 3, 4, 5 व 6 जैसे वाक्य बनाएँ, जैसे,



1. मोहन ने काम किया।
2. आरती ने चाय पी।
3. आरती ने खाना खाया।
4. मोहन ने किताब पढ़ी। आदि।

नियम-3: यदि कर्त्ता के साथ 'ने' लगा हो, तो क्रिया का रूप कर्म के अनुसार होगा।

क्या ऐसा भी हो सकता है कि कर्त्ता और कर्म दोनों में ही विभक्ति लगी हो? वाक्य 7-8 में ऐसा ही है। बच्चे ऐसे और वाक्य भी बना सकते हैं,

1. अध्यापक ने राम को बुलाया।
2. आरती ने अंजु को मारा।
3. अनिता ने विनोद को पढ़ाया। आदि।

नियम 4 बच्चे सरलता से बना लेंगे।

नियम-4: यदि कर्त्ता और कर्म दोनों में विभक्ति लगी हो, तो क्रिया पुल्लिंग एक वचन में होती है।

यह आवश्यक नहीं कि बच्चों के साथ नियम बनाते समय कर्त्ता, कर्म, विभक्ति आदि जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाए। करने वाले को कर्त्ता कहते हैं। विभक्ति के लिए यह कहना काफी होगा कि 'ने', 'को' आदि का प्रयोग हुआ है।

इन नियमों को बनाते, समझते, सुलझाते हुए बच्चों को कई दिन लगेंगे। लेकिन उन्हें इसमें आनन्द आएगा और बहुत लाभ भी होगा। संक्षेप में:

कर्त्ता	क्रिया
विभक्ति-रहित	नियम-2
विभक्ति-सहित, कर्म विभक्ति-रहित	नियम-3
कर्त्ता और कर्म दोनों विभक्ति-रहित	नियम-4

इस लेख में भाषा-विज्ञान के नियमों का अत्यधिक सरलीकरण किया गया है। उद्देश्य भाषा-विज्ञान में हुनर पाना नहीं अपितु बच्चों को अपनी गलतियाँ स्वयं पहचानने के तरीकों से अवगत कराना है। आशा है इस तरह के अभ्यास से कक्षा का काम रोचक होगा, बच्चों का ध्यान भाषा के सही रूपों की तरफ आकर्षित होगा एवं बच्चों का बौद्धिक विकास भी होगा।

स्रोत:

- रमाकान्त अग्निहोत्री, होशंगाबाद विज्ञान बुलेटिन, मई 1986, अंक 20, पृ 6-7। (https://www.eklavya.in/pdfs/archives/vigyan_bulletin/Hoshangabad_Vigyan_Bulletin_issue_20.pdf)